का...का...कौवे ने सबक सीखा

गीता धर्मराजन

चित्रांकनः ललित अरोड़ा

यह किताब

....

की है।

dFkk d fo"k; e

कथा एक लाभ निरपेक्ष संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में हुई। शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में कथा का अनूठा योगदान है। कथा झुग्गी-झोपड़ी, बस्तियों और सरकारी स्कूलों में काम करती है ताकि हर बच्चा मज़े के लिए और अच्छी तरह पढ़ सके। महिलाओं और अध्यापिकाओं के द्वारा कथा बच्चों में उनकी प्रतिभा को उजागर करने में मदद करती है।

हमारी किताबें, वर्कशॉप और शिक्षण केन्द्र, कहानी के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ती हैं। कथा का अनुवाद के क्षेत्र में किया हुआ काम भारतीय प्रकाषन के इतिहास में अनूठा माना जाता है। इसे *इकोनोमिक टाइम्स* ने इन शब्दों में सराहा है, "A unique and special moment in Indian publishing history ..."

कथा की पुस्तकों को विश्व स्तर पर ख्याति मिली है। अंतर्राष्ट्रीय ज्युरी द्वारा प्रतिष्ठित एस्ट्रिड लिंडग्रिन पुरस्कार के लिए भी कथा का नामाँकन किया गया है। बाल साहित्य के क्षेत्र में यह पुरस्कार विश्व में सबसे बड़ा माना जाता है।

कथा नवीन एवं अनुभवी लेखकों, अनुवादकों और चित्रकारों के साथ काम करती है।

क्या आपको बच्चों के लिए लिखना, चित्र बनाना, अनुवाद करना अच्छा लगता है? तो अपनी प्रतिलिपि इस ईमेल आई डी पर भेजें: editors@katha.org, और बनें कथा परिवार का हिस्सा।

"[Katha] ... an educational jewel in India's crown."
— **Naoyuki Shinohara, Deputy Managing Director, International Monetary Fund**

"Katha stands as an exemplar for all the creative projects around the world that grapple with ordinary and dramatic misery in cities." — **Charles Landry, The Art of City Making**

"Katha has a real soft corner for kids. Which is why it … create[s] such gorgeous picture books for children."
— **Time Out**

"Katha's work is driven by the idea that children can bring change to their communities that is sustainable and real, just as the children do in [their books]." — **Papertigers**

Copyright © KATHA

का . . . का . . . कौवे ने सबक सीखा

गीता धर्मराजन

चित्रांकनः ललित अरोड़ा

KATHA

Copyright © KATHA

नटखट का... का... कौवा सब को खूब तंग करता।
"आह...हा...!" वह कहता । "अब देखो कैसे तुम्हें और सुंदर बनाता हूँ।" सारे जानवर, चील और बच्चे – सब का... का....कौवे से परेशान थे।

Copyright © KATHA

Copyright © KATHA

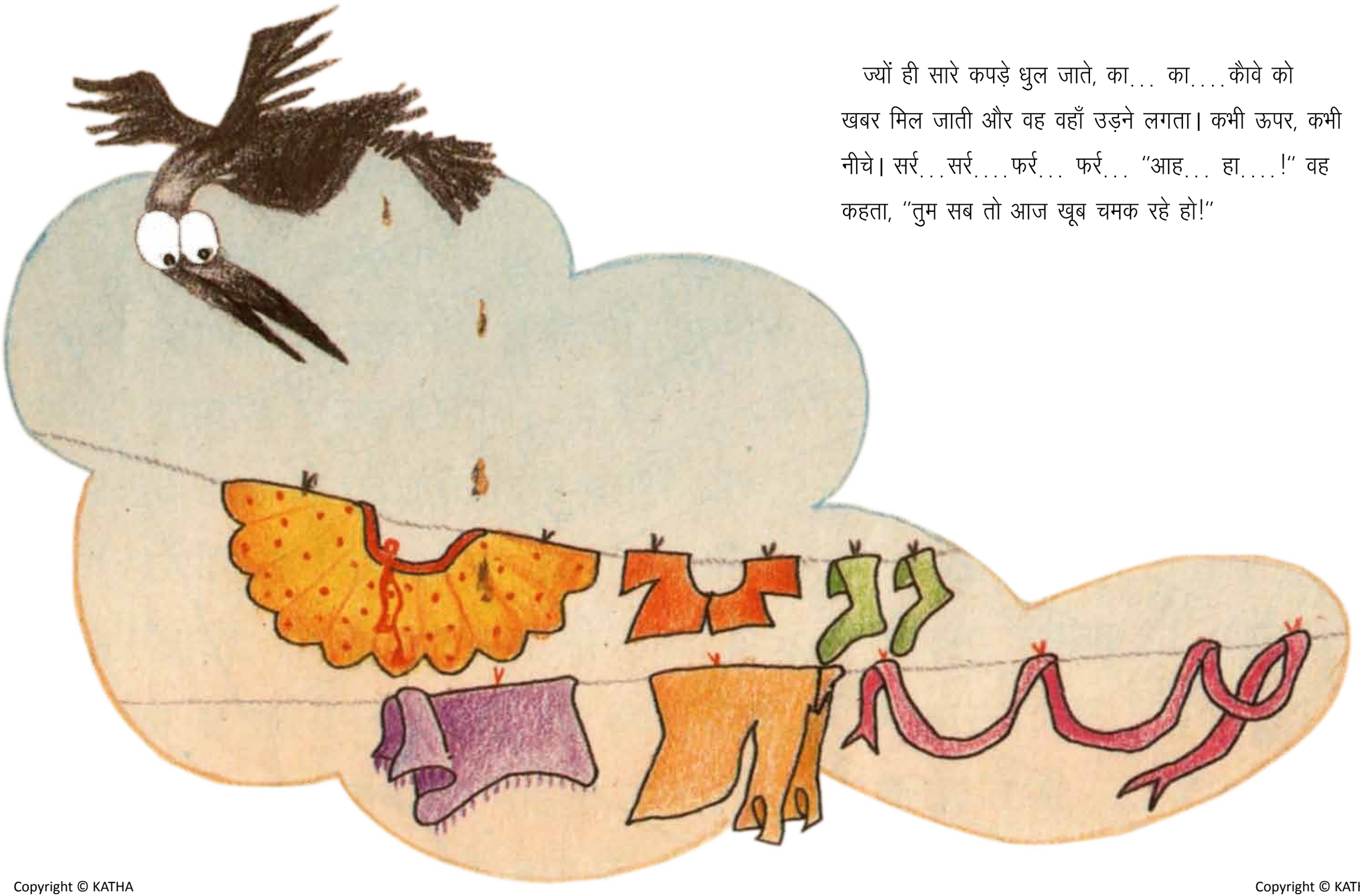

ज्यों ही सारे कपड़े धुल जाते, का... का....कौवे को खबर मिल जाती और वह वहाँ उड़ने लगता। कभी ऊपर, कभी नीचे। सर्र...सर्र....फर्र... फर्र... "आह... हा....!" वह कहता, "तुम सब तो आज खूब चमक रहे हो!"

Copyright © KATHA

Copyright © KATHA

'बेवकूफ़, नटखट का... का....कौवा!' सब कहते।

'हाँ, सच,' टी.वी. के एन्टीना ने कहा। 'जब वह मेरे ऊपर बैठकर झूला झूलता है तो सच कहता हूँ, मुझे तो चक्कर ही आने लगते हैं।'

सारे चिड़िया, कपड़े और टी. वी. एन्टीना ने मिलकर एक सभा बुलाई।

शबाना के रंग–बिरंगे रिबन ने तरकीब सुझाई।

Copyright © KATHA

Copyright © KATHA

अगले दिन, जब कपड़े सुखाने वाले तार पर ढ़ेरों कपड़ों को झूलते हुए देखा तो का... का....कौवा खुशी से खिल उठा। और झट सफ़ेद कमीज़ पर जा बैठा।

एक, दो और .....तीन !' कहकर सब कपड़े एक साथ उड़े और कौवे पर जा बैठे।

Copyright © KATHA

'अरे! छोड़ दो मुझे !' का... का....कौवा गिड़गिड़ाया। 'पहले तुम वायदा करो कि अब कभी भी हमें मैला नहीं करोगे,' कपड़ों ने कहा। 'वायदा रहा!' कौवा चिल्लाया। 'सच, मेरी कसम!

Copyright © KATHA

और हाँ, का... का... कौवे ने अपना वायदा
पूरा किया और कपड़ों को मैला करना छोड़ दिया।
अब तो सारे कपड़े उसके पक्के दोस्त हैं!

Copyright © KATHA

Copyright © KATHA

xhrk /kejktu बच्चों के लिए कहानियाँ लिखना पसंद करती हैं। वह *टारगेट* पत्रिका और *पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय* की पत्रिका *पेन्सिलवेनिया गज़ेट* की संपादक भी रह चुकी हैं। साहित्य एवं शिक्षा में किए गए इनके अद्वितीय योगदान के लिए इन्हें सन् 2012 में राष्ट्रीय सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।

fp=kdu% yfyr vjkMk

Copyright © KATHA

Copyright © KATHA

एक नटखट का ... का ... कौवे ने सभी जानवर, चील, उनके बच्चों और कपड़ों को परेशान कर रखा था। साफ धुले हुए कपड़ों को गंदा करता और टी. वी. के एनटीना पर बैठकर उसे चक्करा देता। तो चलो पढ़ें और जानें इस नटखट कौवे को और कैसे उसे सबक मिला।